



फलौदी



श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री



श्री भजनलाल शर्मा
मुख्यमंत्री, राजस्थान

पंच गौरव जिला फलौदी



जिला प्रशासन, फलौदी





मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश



राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच-गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक बनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच-गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूं।


(भजन लाल शर्मा)

विषय सूची

1. प्रस्तावना
2. कार्यक्रम के उद्देश्य
3. एक ज़िला एक उपज- जीरा
4. एक ज़िला एक वनस्पति प्रजाति - जाल वृक्ष
5. एक ज़िला एक उत्पाद- सोनामुखी के उत्पाद
- 6 .एक ज़िला एक पर्यटन स्थल- खीचन
7. एक ज़िला एक खेल-एथलेटिक्स



प्रस्तावना

जिले की अनूठी भौगोलिक संरचना, सांस्कृतिक विविधता, पारंपरिक कला और कारीगरी तथा विशेष प्रकार की कृषि और वनस्पति की उपज ने हमारे जिले को एक विशिष्ट पहचान दिलाई है। यहां की विरासत और पारिस्थितिकी हमें अपनी पहचान पर गर्व करने का अवसर देती है। जिले में विभिन्न प्रकार के हस्तशिल्प, उद्योग, कृषि और खनिज संसाधन हैं जो न केवल क्षेत्रीय बल्कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी महत्वपूर्ण हैं।

राज्य सरकार द्वारा शुरू किए गए ”पंच गौरव” कार्यक्रम के तहत हमारे जिले की विशिष्टताओं को संरक्षित करने और उन्हें बढ़ावा देने के लिए एक समर्पित कार्य योजना बनाई गई। इस कार्यक्रम के माध्यम से हमारे जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान मिलेगी।

इस पुस्तक में जिले के पंच गौरव तत्वों को ध्यान में रखते हुए चयनित किए गए प्रमुख उत्पादों, उपजों, वनस्पतियों, खेलों और पर्यटन स्थलों का विवरण दिया गया है। इसके माध्यम से जिले की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और पारिस्थितिकीय धरोहर का संरक्षण और विकास सुनिश्चित होगा, साथ ही साथ रोजगार के अवसरों में भी वृद्धि करेगा।

जिले की अनूठी पहचान और सामर्थ्य को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इस पुस्तक में दी गई जानकारी जिले के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होगी। साथ ही ”पंच गौरव” के तहत चयनित तत्वों के संवर्धन से जिले को न केवल सांस्कृतिक दृष्टि से बल मिलेगा बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी विकास के नए मार्ग खुलेंगे।

यह पुस्तक जिले के ऐतिहासिक गौरव और भविष्य के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में कार्य करेगी जिससे स्थानीय निवासियों को गर्व होगा और समग्र रूप से जिले की समृद्धि में वृद्धि होगी।

कार्यक्रम के उद्देश्य

- जिले की आर्थिक, पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और संवर्धन।
- स्थानीय शिल्प, उत्पाद, कला को संरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवता, विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
- स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिलों में स्थानीय रोजगार को बढ़ाकर जिले से प्रवास को रोकना।
- जिलों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करना।
- प्रमुख वनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा देना।
- खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सृजित करना।
- ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना एवं इन स्थलों पर वैश्विक स्तर की आधारभूत सुविधाएं विकसित करना।
- सभी जिलों में समान विकास को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय विषमताओं/असंतुलन को कम करना।

जिला फलौदी - पंच गौरव

पंच गौरव राजस्थान सरकार का महत्वपूर्ण कार्यक्रम हैं। जो राज्य के विभिन्न ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और पर्यावरणीय धरोहर स्थलों को संवारने और संरक्षित करने के उद्देश्य से शुरू किया गया है। पंच गौरव कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत को सहेजना और उसे वैश्विक स्तर पर एक पहचान दिलाना है। पंच गौरव कार्यक्रम के तहत फलौदी जिले के पंच गौरव :- एक जिला एक उपज- जीरा, एक जिला एक वृक्ष- जाल, एक जिला एक उत्पाद- सोनामुखी, एक जिला एक पर्यटन स्थल- खीचन, एक जिला एक खेल- एथेलेटिक्स का चयन किया गया हैं।



एक जिला एक उपज - जीरा

एक जिला एक उपज - जीरा :- फलौदी का जीरा न केवल इस क्षेत्र का गौरव है, बल्कि यह किसानों और व्यापारियों के लिए समृद्धि का साधन भी है। इसकी अनूठी सुगंध, स्वाद और औषधीय गुण इसे वैश्विक बाजार में एक विशेष स्थान दिलाते हैं। पंच गौरव के तहत एक जिला एक उत्पाद में जिले का जीरा न केवल क्षेत्रीय, बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी चमक बिखेर रहा है। यह फलौदी की पहचान और समृद्धि का प्रतीक है।

रबी सीजन में फलौदी जिले के एक बहुत बड़े भू-भाग पर जीरे की खेती की जाती है। क्षेत्रफल की दृष्टि से जीरे की फसल फलौदी जिले की प्रमुख फसल हो गई है। यहां गत वर्ष 2023-24 में 1.41 लाख हैक्टर में जीरे की फसल बोर्ड गई थी, जो कि यहां की रबी फसल की कुल बोर्ड गई फसलों का लगभग 40 प्रतिशत क्षेत्रफल था। इस वर्ष रबी 2024-25 में अब तक लगभग 1.50 लाख हैक्टर में जीरे की बुवाई हुई है।



फलोदी जिले की जलवायु तथा मृदा जीरे की खेती के लिये बहुत अनुकूल हैं। यहां की मृदा में पाये जाने वाले सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे जस्ता व गंधक उचित मात्रा में पाये जाते हैं। जिसके कारण यहां उत्पादित होने वाले जीरे की गुणवत्ता अन्य जिलों की अपेक्षा अच्छी होती है। जीरे की विशेष गंध के लिए इसमें उपस्थित क्यूमिनोल नामक पदार्थ होता है। जिसकी वजह से इसके तेल का औषधिय व सुगन्धित उपयोग किया जाता है। आमतौर पर इसका उपयोग स्वाद, इत्र, सुगन्ध और खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में प्रमुख सामग्री के रूप में किया जाता है।

कृषि, उद्यान विभाग व कृषि विज्ञान केन्द्र के सामूहिक प्रयासों से जिले में किसानों के लिए समय-समय पर जीरे की नई-नई उन्नत किस्मों आदि का समावेश होने से इसकी उत्पादकता में लगभग 31.98 प्रतिशत वृद्धि हुई है। राज्य में फलोदी जीरे की बुवाई व उत्पादन में तृतीय स्थान पर हैं।

उन्नत किस्म :- RZ-19] RZ-209] RZ-223] RZ-345] RZ-341] GC-1] GC-2] GC-3] GC-4

खाद एवं उर्वरक :- जीरे की अधिक पैदावार लेने के लिए 10 टन प्रति हेक्टेयर के हिसाब से जुताई से पहले अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद खेत में बिखेर कर मिला देना चाहिये। ढाई टन राया का अवशेष प्रति हेक्टेयर के हिसाब से अप्रैल-मई माह में खेत में डाल कर सिंचाई कर अच्छी तरह से मिट्टी में मिला देने से उच्चा रोग के नियन्त्रण के साथ-साथ मृदा में जीवांश की मात्रा को भी बढ़ाता है। उर्वरकों का प्रयोग मिट्टी परीक्षण परिणाम के अनुसार औसत उर्वरता वाली भूमि में 30 किलोग्राम नत्रजन, 20 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 15 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता रहती है। इसके अतिरिक्त अच्छी व गुणवत्ता युक्त उत्पाद हेतु बुवाई के समय 40 किलोग्राम गन्धक जिप्सम के माध्यम से प्रति हेक्टेयर खेत में डालें।

बीज की मात्रा एवं बीजोपचार :- उन्नत किस्म का 12-15 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त रहता है। फसल को बीज जनित रोगों से बचाने हेतु बुवाई से पहले बीजों का कार्बण्डाजिम 50 डब्लू पी. या थायरम दवा 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार अवश्य करें।

बुवाई का समय व तरीका :- जीरे की बुवाई नवम्बर के पहले पखवाड़े में कर देनी चाहिये। साधारणतया किसानों द्वारा जीरे की बुवाई छिटकवां विधि से की जाती हैं। पहले से तैयार खेत में उचित आकार की क्यारियां बनाकर उनमें बीजों को एक साथ छिटक कर क्यारियों में लोहे की दंताली इस प्रकार फिरा देनी चाहिये कि बीज के ऊपर मिट्टी की एक हल्की परत चढ़ जाये। परन्तु निराई, गुडाई, अन्य शस्य कियाओं व दवाईयों के छिड़काव की सुविधा की दृष्टि से कतारों में बुवाई करना अधिक उपयुक्त पाया गया है। कतारों में बुवाई के लिए सीडिल से भी 30 से.मी. की दूरी पर कतारों में बुवाई की जा सकती है।

सिंचाई:- बुवाई के तुरन्त बाद सिंचाई करें एवं दसूरी हल्की सिंचाई पहली सिंचाई के 8-10 दिन बाद अंकुरण के समय करें। अगर दूसरी सिंचाई के बाद पूर्ण अंकुरण नहीं हुआ हो या जमीन पर पपड़ी जम गई हो तो एक हल्की सिंचाई और करना लाभदायक रहेगा।

इसके बाद मृदा की संरचना तथा मौसम के अनुसार 15 से 25 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें। दाने बनते समय अन्तिम सिंचाई करनी चाहिए। फव्वारा विधि द्वारा कुल 5 सिंचाईयों पहली बुवाई के समय, फिर दस, तीस, एवं अस्सी दिनों की फसल अवस्था पर करें तथा फव्वारा 3 घण्टे चलायें।

छंटाई व निराई-गुड़ाई :- जीरे की शुरूआती बढ़वार बहुत धीमी होती है तथा इसका पौधा भी काफी छोटा होता है। अतः इसको खरपतवारों से काफी प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है। खरपतवार नियंत्रण तथा भूमि में उचित वायु संचार बनाये रखने के लिए दो निराई-गुड़ाई आवश्यक है। प्रथम निराई-गुड़ाई बुवाई के 30-35 दिन बाद व दूसरी 55-60 दिन बाद करनी चाहिए। पहली निराई गुड़ाई के समय अनावश्यक पौधों को भी हटा दवें जिससे पौधे की दूरी 5 सेन्टीमीटर रहें।

कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधियां:-

- किसानों को उन्नत खेती की जानकारी हेतु प्रगतिशील कृषकों को प्रशिक्षित करने के लिये कृषक प्रशिक्षण, प्रक्षेत्र दिवस व राज्य व अन्तर्राज्य भ्रमण करना।
- जीरे की उन्नत खेती तकनीकी की जानकारी हेतु साहित्य वितरण करना।
- जीरे फसल की उन्नत किस्म का बीज के मिनिकिट वितरण एवं फसल प्रदर्शन द्वारा उत्पादकता व उपज में वृद्धि लाना।
- समन्वित पौषक तत्व प्रबंधन द्वारा जीरे की उत्पादकता व गुणवत्ता में वृद्धि करना।
- कीट एवं व्याधि के प्रकोप से बचाने हेतु जीरा फसल में समन्वित कीट /व्याधी प्रबंधन (IPM) की जानकारी प्रदान करना।
- जैविक खेती को प्रोत्साहित कर अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप उत्पादन करना एवं जैव रसायनों की उपलब्धता में वृद्धि करना।
- जीरे की उपज व गुणवत्ता सुधार अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार ग्रेडिंग पेकिंग व जैविक उत्पादन को बढ़ावा देने के लिये कृषक समूह व प्रसंस्करण उद्योग को प्रोत्साहन के लिये सहकारी विभाग के माध्यम से जीरा किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) के गठन का प्रयास किया जायेगा।
- जैविक खेती व मानक उत्पादन हेतु कृषक उत्पादक संगठन/समूह की सहायता से विशेष उत्पाद आधारित उत्पादन को बढ़ावा देना।
- कृषकों में उच्च गुणवत्ता व अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप उत्पादन व उत्पादकता में वृद्धि के लिये उन्नत कृषि तकनीकी की जानकारी व प्रतियोगिता के साथ साथ नवाचार का समावेश हेतु किसान मेले का आयोजन करना।
- प्रति ईकाई उत्पादन लागत कम करना एवं कृषक आय में वृद्धि करना।
- स्थानीय कृषि उपज मण्डी समिति में जीरा उत्पादन के विपणन हेतु सुविधाओं में वृद्धि करना।

कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय- 100.00 लाख रुपये

एक जिला एक वृक्ष- जाल

एक जिला एक वृक्ष- जाल का धार्मिक, सांस्कृतिक, चिकित्सीय व पर्यावरणीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण स्थान हैं। जाल वृक्ष मरुस्थलीय पर्यावरण में उगने के लिए विशेष रूप से अनुकूलित है और यह शुष्क जलवायु में भी जीवित रह सकता है। रेगिस्तानी क्षेत्र में यह वृक्ष मृदा अपरदन को रोकने में मुख्य भूमिका निभाता है। जिले में कोलू बापूजी के ओरण, उग्रास, ढढू में यह बहुतायत में पाया जाता है। इसे टूथब्रश ट्री, अरक, जाक, मस्टर्ड ट्री तथा मिसवाक भी कहा जाता है। इसकी शाखाए, जड़े प्राकृतिक टूथब्रश के रूप में काम में ली जाती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी ओरल हाइजीन के लिए इस वृक्ष का उल्लेख किया है। इसमें एंटी बैक्टेरियल एवं एंटी इन्फ्लेमेटोरी गुण होते हैं। जाल वन्यजीव संरक्षण में एक उपयोगी वृक्ष है। वृक्ष की छाया में वन्यजीव तथा विभिन्न प्रकार के पक्षी आश्रय लेते हैं। जाल की दो मुख्य प्रजातियां मीठाजाल व खाराजाल पाई जाती हैं।



पीलू जाल वृक्ष का महत्व:

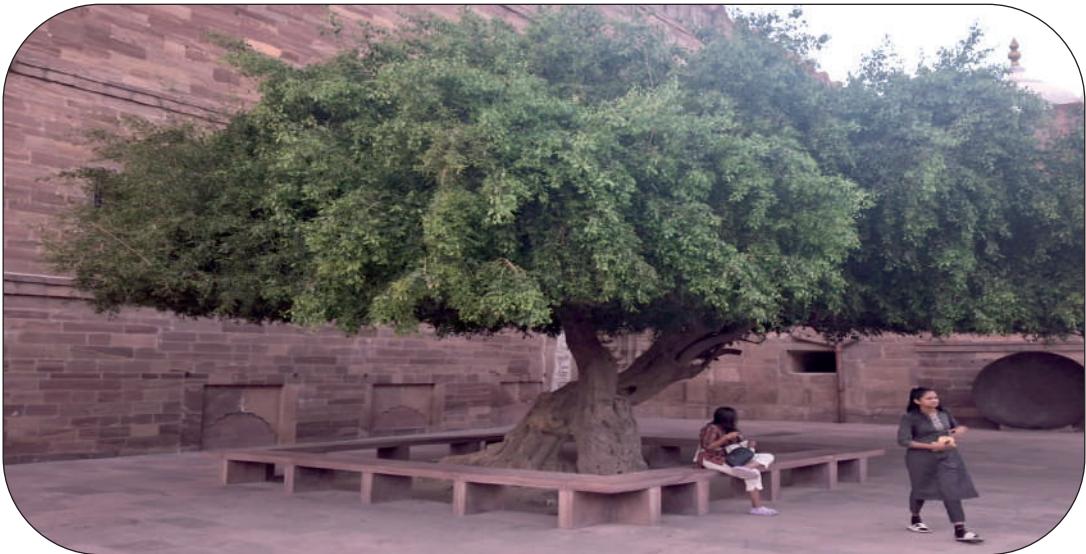
- 1. पर्यावरणीय महत्व :-** पीलू जाल वृक्ष शुष्क क्षेत्रों में जैव विविधता को बढ़ावा देता है। इसकी जड़ें मिट्टी को सुदृढ़ करती हैं और जल संरक्षण में मदद करती हैं। यह वृक्ष वायु प्रदूषण को कम करने में भी सहायक है और भूमि क्षरण को रोकता है।
- 2. चिकित्सीय उपयोग-** पीलू के विभिन्न हिस्सों, जैसे पत्तियाँ छाल और फल, पारंपरिक चिकित्सा में उपयोग किए जाते हैं। यह पाचन संबंधी समस्याओं, बुखार, शरीर की कमजोरी और त्वचा संबंधी रोगों के उपचार में सहायक माना जाता है।
- 3. आर्थिक महत्व-** पीलू की लकड़ी मजबूत, टिकाऊ और जल प्रतिरोधी होती है, इसलिए इसका उपयोग निर्माण कार्यों, फर्नीचर, बाड़ लगाने, और अन्य औद्योगिक उपयोगों में किया जाता है। इसके फल पशुओं के आहार के रूप में महत्वपूर्ण होते हैं, विशेषकर बकरियाँ और गायें इन्हें खाना पसंद करती हैं।

4. सांस्कृतिक महत्वः- पीलू जाल वृक्ष को धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व प्राप्त है। यह पेड़ ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन का प्रतीक है। इसकी पूजा-अर्चना और पारंपरिक उत्सव होते हैं। पीलू को पर्यावरणीय समृद्धि और जीवनदायिनी के रूप में पूजा जाता है।

वृक्ष की विशेषताएँ

1. आकार और संरचना- पीलू वृक्ष की ऊँचाई लगभग 10-12 मीटर तक होती है। इसकी शाखाएँ फैलावदार होती हैं, और पत्तियाँ छोटी, मुलायम और एकत्रित होती हैं। यह वृक्ष आमतौर पर पतले, कांटेदार तने और शाखाओं के साथ होता है।
2. पत्तियाँ और फूलरू पीलू वृक्ष की पत्तियों नाजुक होको गर्मी में छावं देने का काम करती हैं। इसके फूल पीले रंग के छोटे गुच्छों के रूप में खिलते हैं और आमतौर पर सर्दियों में आते हैं।
3. पीलू के फल छोटे और गोल होते हैं, जो हरे से पकने पर भूंगे रंग के हो जाते हैं। इन फलों में उच्च मात्रा में प्रोटीन और पोषक तत्व होते हैं, जो पशुओं के लिए आहार का अच्छा स्रोत होते हैं।
4. जड़ें पीलू वृक्ष की जड़ें गहरी होती हैं, जिससे यह पेड़ सूखा सहन कर सकता है और जमीन के अंदर से पानी निकाल सकता है। यह विशेषता इसे मरुस्थलीय क्षेत्रों में जीवन के लिए सक्षम बनाती है।
5. पीलू के फल और पत्तियाँ पाचन में सुधार करती हैं और गैस, अपच जैसी समस्याओं को दूर करने में सहायक होती हैं। यह आंतों की सफाई करता है और कब्ज की समस्या को कम करता है।
6. पीलू में एंटीऑक्सिडेंट, एंटीबैक्टीरियल और एंटीवायरल गुण होते हैं, जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करते हैं। यह शरीर को संक्रमण से बचाने में मदद करता है।
7. पीलू की टहनियों (मिसवाक) का उपयोग दांतों को साफ करने के लिए किया जाता है। यह दांतों में कैविटी, मसूड़ों की सूजन और सांसों की बदबू को कम करता है। इसमें प्राकृतिक एंटीबैक्टीरियल और एंटीसेइक गुण होते हैं, जो ओरल हेल्थ को बनाए रखते हैं।

पीलू जाल वृक्ष न शुष्क क्षेत्रों के पर्यावरण के लिए आवश्यक है बल्कि यह स्थानीय समाज के लिए भी बहुत उपयोगी है। इसके कई लाभ हैं- यह न केवल जलवायु और पर्यावरण को संजोने का काम करता है, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था, पशुपालन और चिकित्सा में भी सहायक है। पीलू वृक्ष का संरक्षण और उसके महत्व को समझना हमें प्राकृतिक संसाधनों के सही उपयोग और प्रबंधन की दिशा में प्रेरित करता है।



कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधियां

फलौदी जिले में फलौदी व बाप रंजे है, इन दोनों रेंज में जाल के पौधे तैयार कर वर्ष 2025-26 में जिले में कुल 1 लाख 50 हजार जाल के पौधे रोपित किये जाना प्रस्तावित हैं।
पंचायत समितिवार जन-जागरूकता कैम्प आयोजित किया जाना प्रस्तावित हैं।

कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय- 37.24 लाख रुपये

एक जिला एक उत्पाद- सोनामुखी के उत्पाद

एक जिला एक उत्पाद- सोनामुखी एक हर्बल पौधा हैं जो कि फलौदी में पाया जाता हैं। यह प्राकृतिक पौधा आर्युर्वेदिक दवाओं के निर्माण में उपयोगी होता है। यह एक औषधि है जिसकी फसल के लिए किसी खाद या उर्वरक की आवश्यकता नहीं होती हैं।

सोनामुखी की फसल फलौदी एवं आसपास के क्षेत्रों में होती है। यह वर्ष मैं तीन बार काटी जाती है। अगस्त ,सितंबर, दिसंबर, जनवरी और मार्च जून। लगभग उत्पादन 3000 टन प्रति वर्ष। जिले में कुल 60 फैक्ट्री संचालित हैं। जिले में वर्ष 2022-23 में सोनामुखी का 143 करोड़ रुपए तथा 2023-24 में 120 करोड़ रुपए का कारोबार हुआ। जिले में सोनामुखी का 70 प्रतिशत उत्पाद चीन, रूस, ईस्ट एशिया तथा योरोप के देशों में निर्यात होता है। जिले में 2005 से सोनामुखी का उत्पादन किया जा रहा है।



- कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधियाँ :-
- निर्यात सुविधाओं में सहायता और सम्बंधित दस्तावेजों की औपचारिकता की जानकारी के लिए जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया जायेगा।
- वैश्विक बाजार की मांग के अनुसार विकास, पैकेजिंग, अंतर्राष्ट्रीय मानक के लेबलिंग इ कॉमर्स लिंकेज और विपणन मार्केटिंग इंटलीजेंस के लिए मेंटरशिप कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे।
- मान्यता प्राप्त टेस्टिंग लेब की स्थापना की जायेगी जहां उत्पाद का नमूना परिक्षण सशुल्क किया जायेगा
- सोनामुखी के उत्पाद की आपूर्ति, यूनिट की मांग के अनुरूप करने के लिए कॉमन फेसिलिटी सेंटर की स्थापना की जायेगी।
- जिला स्तर पर एक वेब पोर्टल विकसित किया जायेगा, जहां कार्यशालाओं, सेमिनारों और बैठकों के बारे में सभी प्रकार की जानकारी उपलब्ध होगी।



- कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय - 995.10 लाख रुपये
- पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय - 5.10 लाख रुपये

एक जिला एक पर्यटन स्थल- खीचन

एक जिला एक पर्यटन स्थल- खीचन:- फलौदी जिला मुख्यालय से 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित खीचन गाँव शीतकालीन प्रवासी पक्षी कुरजां (डेमोसाइल क्रेन) व लाल पत्थर से बनी कलात्मक हवेलियों के लिये पंच गौरव कार्यक्रम के तहत ”एक जिला, एक गंतव्य” हिस्सा बन चुका है। खीचन न केवल जैव विविधता और पक्षी संरक्षण का प्रतीक है, बल्कि पर्यावरण और पर्यटन के लिए एक प्रेरणास्रोत भी है। खीचन गाँव की पहचान उसके अद्वितीय पक्षी मेहमानों से है। हर साल, सितंबर से मार्च के बीच, हजारों कुरजां पक्षी मध्य एशिया, रूस, और मंगोलिया जैसे ठंडे क्षेत्रों से लंबी यात्रा करके यहां आते हैं।



स्थानीय लोग पक्षियों को दाना खिलाने की परंपरा निभाते हैं, जिसे ”चुग्गा घर” कहा जाता है। यह दुनिया भर के पक्षी प्रेमियों के लिए आकर्षण का केंद्र बन गया है। खीचन गाँव की संस्कृति, पारंपरिक भोजन, और मेहमाननवाजी पर्यटकों को गहराई से प्रभावित करती है।



खींचन गाँव की आबोहवा कुरजां के साथ साथ कई अन्य प्रजातियों के पक्षियों को लुभाने लगी है जिन्हें निहारने के लिये देशी-विदेशी पर्यटकों, वन्यजीव प्रेमियों तथा फोटोग्राफरों का जमघट लगा रहता है। हजारों की संख्या में इन मेहमान पक्षियों के प्रवास के कारण राज्य सरकार ने खींचन को “कुरजां कंजर्वेशन क्षेत्र” घोषित किया है, जिससे इको ट्रूरिज्म की सम्भावनायें भी बढ़ गई हैं। खींचन की हवेलियां व तालाब भी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र हैं। खींचन अब विश्वभर के पक्षी-प्रेमियों और पर्यटकों के लिए एक प्रमुख गंतव्य बन गया है।



• कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधियां-

1. प्रचार प्रसार-

- ब्रोशर, पोस्टर व सोशल मीडिया सामग्री का निर्माण, खींचन को राज्य के पर्यटन मानचित्र में शामिल करना।
- प्रसिद्ध ट्रेवल व ट्यूरिज्म टीवी चैनल, पोर्टल / वेबसाइट पर प्रदर्शन हेतु कन्टेन्ट निर्माण प्रदर्शन, ट्रेवल ब्लागर्स, यूट्यूबर्स आदि का भ्रमण कार्यक्रम विभिन्न राजमार्गों पर होर्डिंग्स व साइनेज लगाना।

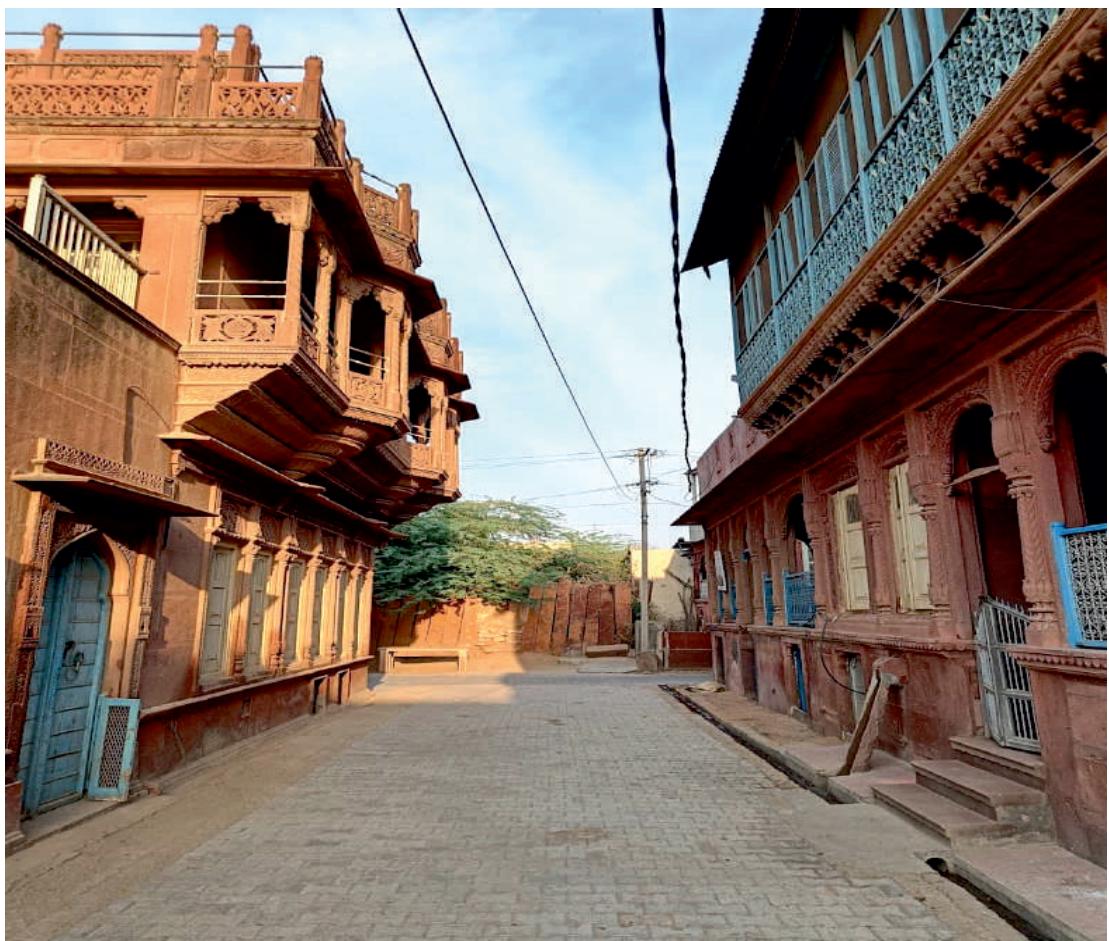
2. यातायात व सुगम पहुंच-

- RTDC द्वारा संचालित पर्यटक ट्रेन पैलेस ऑन क्लील्स के यात्रा कार्यक्रम (प्जपदमतंतल) में फलोदी में ठहराव निर्धारित करना।

- दिल्ली, जयपुर, बीकानेर, जोधपुर से फलौदी के लिए यात्री ट्रेनों की संख्या में वृद्धि कराना। फलौदी से खींचन तक फोरलेन सड़क मार्ग व कलात्मक प्रकाश व्यवस्था।
- फलौदी स्थित हवाई पट्टी को चार्टर्ड वायुयानों के लिए उपयोग हेतु विकसित करना।

3. खींचन स्थित पर्यटक स्थलों का विकास -

- विभिन्न तालाबों व कुरजां विचरण स्थलों पर बर्ड वाचिंग प्लेटफार्म/टॉवर्स व फोटोग्राफी पॉइंट्स का निर्माण।
- सन राइज व सन सेट व्यू पाइन्ट का निर्माण हैरीटेज बॉक वे का विकास।
- नेचर बॉक पाथ वे का निर्माण जल जीवन मिशन के तहत खींचन में निर्माणाधीन RWR में नौकायन के लिए आवश्यक संसाधनों का विकास।
- कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय - 741.00 लाख रुपये
- तथा पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय (लाख रुपये में)- 288.00 लाख रुपये



एक जिला एक खेल -एथलेटिक्स

एक जिला एक खेल एथलेटिक्स - हर जिले में अपनी संस्कृति, परंपराओं और विरासत के साथ-साथ खेलों का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। फलौदी जिले ने एथलेटिक्स में अपनी अलग पहचान बनाई हैं। राज्य सरकार द्वारा पंच गौरव के तहत एक जिला एक खेल में एथेलेटिक्स का चयन किया गया है। जिले में एथेलेटिक्स खेलों में सबसे ज्यादा खिलाड़ी भाग लेते हैं। जिले में खेल के प्रति युवाओं की रुचि व प्रतिस्पर्धा की भावना से पिछले वर्षों में राज्य स्तर पर स्वर्ण पदक जीते गए हैं। जिले का पहला राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण पदक मोनिका बिश्वोई ने तश्तरी फेंक में प्राप्त किया। इसी प्रकार राज्य स्तर पर कुसुम बिश्वोई ने गोला फेंक में, श्रवण कुमार गोला फेंक में, कुमकुम ने हेमर थ्रो में, सोनी ने बांसकूद में, पूजा ने ऊंची कूद में स्वर्ण पदक जीत जिले का नाम रोशन किया।



जिले में एथलेटिक्स कोच रामेश्वर राय, आसूलाल छंगाणी, रामचंद्र व्यास, रणजीता राम के प्रयासों से जिले में खेलों के प्रति जागरूकता बढ़ा ने तथा सर्वांगीण विकास में विशेष योगदान रहा। जिले में वर्ष 2024- 25 में सबसे ज्यादा 1521 एथलीटों ने भाग लिया। राज्य स्तरीय खेलों में 108 एथलीटों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए जिले का प्रतिनिधित्व किया। राष्ट्रीय स्तर पर 5 एथलीटों का चयन हुआ।



- कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधियां -
- जिला स्तर पर एथलेटिक्स खेलों के लिए मेजर शैतान सिंह स्टेडियम में 400 मीटर का आदर्श सिंडर धावक पथ (ट्रैक) विशेषज्ञों व तकनीकी रूप से सक्षम शारीरिक शिक्षकों की कमेटी की देखरेख में बनाया जाना प्रस्तावित है।
- समस्त ब्लॉक मुख्यालय पर 400 मीटर का आदर्श सिंडर धावक पथ (ट्रैक) बनवाया जाना प्रस्तावित है जिससे सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में छिपी हुई प्रतिभाओं को मौका मिल सकेगा।
- खेलो इण्डिया योजना में एथलेटिक्स खेल का एक ट्रेनिंग सेंटर स्थापित किया जाएगा जिससे जिला मुख्यालय पर विद्यालयी छात्र छात्राओं को प्रशिक्षण की सुगम सुविधा उपलब्ध हो सके।
- मेजर शैतान सिंह स्टेडियम के अन्दर ही खिलाड़ियों के लिए खेल छात्रावास की व्यवस्था किया जाना प्रस्तावित है।
- जिला स्तर पर एथलेटिक्स खेल के लिए आवश्यक उपकरणों की खरीद किया जाना प्रस्तावित है।
- समर कैम्प - विद्यालय की गर्मियों के अवकाश में एथलेटिक्स की कोचिंग के लिए समर कैम्प आयोजित किया जाना प्रस्तावित है।
- कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय - 180.12 लाख रूपये
- तथा पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय - 100.12 लाख रूपये

जिला प्रशासन, फलौदी